02 / 09 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

बाबा के दिल तख्तनशीन और

सतयुगी विश्व राज्य के अधिकारी होने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा ईश्वरीय याद में समाई हुई हूँ..

➳_ ➳ ईश्वरीय लगन में मगन हूँ...

➳_ ➳ बाबा ने मुझ आत्मा को त्रिमूर्ति तख़्त दे दिया है..

→ मैं अकाल मूर्त आत्मा भृकुटी तख़्त पर विराजमान हूँ..

→ मैं विश्व राज्य तख़्त की अधिकारी हूँ...

→ मैं सर्व श्रेष्ठ बापदादा के दिल तख़्त पर आसीन हूँ...

■ मैं ज्ञान स्वरुप आत्मा हूँ...

■ मैं अनुभव स्वरुप आत्मा हूँ..

■ मैं अनेक बार की स्मृति को सहज अनुभव कर रही हूँ..

▶ मैं बापदादा की अति स्नेही हूँ...

▶ अति समीप हूँ...

➢➢ मैं सत्य स्वरुप आत्मा हूँ...

➳_ ➳ मेरे हर कर्म में सत्यता, सफाई, स्वच्छता है...

➳_ ➳ मेरे हर बोल व कर्म में ये सच्चाई दिखाई दे रही है...

➳_ ➳ मेरा हर संकल्प सत है...

➳_ ➳ हर वचन सत है...

➳_ ➳ सत्य भी है...

➳_ ➳ और सफल भी है...

➳_ ➳ कोई भी संकल्प व बोल व्यर्थ या साधारण नहीं है...

→ मेरे हर कदम में निस्वार्थ सेवा है...

→ सोते हुए भी सेवा..

→ जागते हुए भी सेवा..

→ चलते हुए भी सेवा...

■ मैं अचल और अथक आत्मा हूँ...

■ मैं प्रकृति पति हूँ...

▶ भक्त गण मेरे शक्ति स्वरुप की जोर शोर से पूजा आह्वान कर रहे हैं...

▶ मैं एवररेडी आत्मा हूँ...

▶ हर सब्जेक्ट में स्वयम को सम्पन्न और सम्पूर्ण बना रही हूँ...

▶ मैं समेटने और सामना करने की दोनों शक्तियों से संपन्न हूँ...

➢➢ मैं निरंतर लगन में मगन हूँ...

➳_ ➳ एक बल एक भरोसा...

→ तुम्ही से खाऊँ...

→ तुम्ही से बोलूं...

→ तुम्ही से सुनूँ..

→ तुम्ही से बैठूं...

■ मैं बाबा से किये अपने वायदे निभा रही हूँ...

▶ और विजयी आत्मा बनती जा रही हूँ...